



मिर्जा ग़ालिब

ग़ज़ल



सप्तर्षि प्रकाशन

1 | मिर्जा ग़ालिब ग़ज़ल



1. आह को चाहिये इक उम्र असर होने तक

आह को चाहिये इक उम्र असर होने तक
कौन जीता है तेरी झुल्फ़ के सर होने तक

दाम हर मौज में है हलका-ए-सदकामे-नहंग
देखें क्या गुजरे है कतरे पे गुहर होने तक

आशिकी सबर तलब और तमन्ना बेताब
दिल का क्या रंग करूँ खूने-जिगर होने तक

हमने माना कि तगाफुल न करोगे लेकिन
खाक हो जाएंगे हम तुमको खबर होने तक

परतवे-खुर से है शबनम को फ़ना की तालीम
मैं भी हूँ एक इनायत की नज़र होने तक

यक-नज़र बेश नहीं फुरसते-हसती गाफ़िल
गरमी-ए-बज़म है इक रकसे-शरर होने तक

ग़मे-हसती का 'असद' किस से हो जु़ज़ मरग इलाज
शमा हर रंग में जलती है सहर होने तक



2. बस कि दुश्वार है हर काम का आसां होना

बस कि दुश्वार है हर काम का आसां होना
आदमी को भी मयस्सर नहीं इनसां होना

गिरीया चाहे है खराबी मिरे काशाने की
दरो-दीवार से टपके हैं बयाबां होना

वाए दीवानगी-ए-शौक कि हरदम मुझको
आप जाना उधर और आप ही हैरां होना

जलवा अज्ञ-बसकि तकाज़ा-ए-निगह करता है
जौहरे-आईना भी चाहे है मिज़गां होना

इशरते-कतलगहे-अहले-तमन्ना मत पूछ
ईदे-नज़्जारा है शमशीर का उरीयां होना

ले गए खाक में हम, दागे-तमन्ना-ए-निशात
तू हो और आप बसद रंग गुलिसतां होना

इशरते-पारा-ए-दिल, ज़ख्म-तमन्ना खाना
लज़्जते-रेशे-जिगर, ग़रके-नमकदां होना

की मिरे कतल के बाद, उसने जफ़ा से तौबा
हाय, उस जूद पशेमां का पशेमां होना

हैफ़, उस चार गिरह कपड़े की किस्मत 'ग़ालिब'

जिसकी किस्मत में हो, आशिक का गिरेबां होना





3. दर्द मिन्नत-कशे-दवा न हुआ

दर्द मिन्नत-कशे-दवा न हुआ
मैं न अच्छा हुआ, बुरा न हुआ

जमा करते हो क्यों रकीबों को ?
इक तमाशा हुआ गिला न हुआ

हम कहां किस्मत आजमाने जाएं
तू ही जब खंजर-आजमा न हुआ

कितने शर्ही हैं तेरे लब कि रकीब
गालियां खा के बे मजा न हुआ

है खबर गरम उनके आने की
आज ही घर में बोरीया न हुआ

क्या वो नमस्कृद की खुदायी थी
बन्दगी में मेरा भला न हुआ

जान दी, दी हुयी उसी की थी
हक तो यह है कि हक अदा न हुआ

ज़ख्म गर दब गया, लहू न थमा
काम गर रुक गया रवां न हुआ



रहजनी है कि दिल-सितानी है
ले के दिल, दिलसितां रवाना हुआ

कुछ तो पढ़ीये कि लोग कहते हैं
आज 'ग़ालिब' ग़ज़लसरा न हुआ



4. दायम पड़ा हुआ तेरे दर पर नहीं हूं मैं

दायम पड़ा हुआ तेरे दर पर नहीं हूं मैं
खाक ऐसी जिन्दगी पे कि पत्थर नहीं हूं मैं

कयों गरदिश-ए-मुदाम से घबरा न जाये दिल
इनसान हूं पयाला-ओ-सागर नहीं हूं मैं

या रब ! ज़माना मुझको मिटाता है किस लिये
लौह-ए-जहां पे हरफ़-ए-मुकररर नहीं हूं मैं

हद चाहिये सज्जा में उकूबत के वासते
आखिर गुनहगार हूं काफ़िर नहीं हूं मैं

किस वासते अज्जीज्ज नहीं जानते मुझे ?
लालो-ज़मुरुरुदो-ज़र-ओ-गौहर नहीं हूं मैं

रखते हो तुम कदम मेरी आंखों में कयों दरेग
रुतबे में मेहर-ओ-माह से कमतर नहीं हूं मैं

करते हो मुझको मनअ-ए-कदम-बोस किस लिये
क्या आसमान के भी बराबर नहीं हूं मैं

"ग़ालिब" वज़ीफ़ा खवार हो, दो शाह को दुआ
वो दिन गये कि कहते थे, "नौकर नहीं हूं मैं"



5. धमकी में मर गया, जो न बाबे-नबरद था

धमकी में मर गया, जो न बाबे-नबरद था
इशके-नबरद पेशा, तलबगारे-मरद था

था ज़िन्दगी में मरग का खटका लगा हुआ
उड़ने से पेशतर भी मेरा रंग ज़रद था

तालीफे-नुसखाहा-ए वफ़ा कर रहा था मैं
मजमूअ-ए-ख़्याल अभी फ़रद-फ़रद था

दिल ता ज़िगर, कि साहले-दरीया-ए-खूं है अब
इस रहगुज़र में जलवा-ए-गुल आगे गरद था

जाती है कोई कशमकशा अन्दोहे-इशक की
दिल भी अगर गया, तो वही दिल का दर्द था

अहबाब चारा-साजीए-वहशत न कर सके
ज़िन्दां में भी ख़्याल, बयाबां-नबरद था

यह लाश बेक़फ़न, 'असदे'-ख़सता-जां की है
हक मगफिरत करे, अजब आज़ाद मरद था



6. दिले-नादां तुझे हुआ क्या है

दिले-नादां तुझे हुआ क्या है
आखिर इस दर्द की दवा क्या है

हम हैं मुशताक और वो बेज़ार
या इलाही ये माजरा क्या है

मैं भी मूँह में ज़ुबान रखता हूँ
काश पूछो कि मुद्दआ क्या है

जबकि तुज बिन नहीं कोई मौजूद
फिर ये हंगामा-ए-खुदा क्या है

ये परी चेहरा लोग कैसे हैं
ग़मज़ा-ओ-इशवा-यो अदा क्या है

शिकने-ज़ुल्फ़-ए-अम्बरी क्या है
निगह-ए-चशम-ए-सुरमा क्या है

सबज़ा-ओ-गुल कहां से आये हैं
अबर क्या चीज़ है हवा क्या है

हमको उनसे वफ़ा की है उम्मीद
जो नहीं जानते वफ़ा क्या है



हां भला कर तेरा भला होगा
और दरवेश की सदा क्या है

जान तुम पर निसार करता हूं
मैं नहीं जानता दुआ क्या है

मैंने माना कि कुछ नहीं 'ग़ालिब'
मुफ़्त हाथ आये तो बुरा क्या है



7. दोसत ग़ामखवारी में मेरी सअयी फरमायेंगे क्या

दोसत ग़ामखवारी में मेरी सअयी फरमायेंगे क्या
ज़ख्म के भरते तलक नाखुन न बढ़ जाएंगे क्या

बेन्याजी हद से गुज़री, बन्दा-परवर कब तलक
हम कहेंगे हाले-दिल और आप फरमायेंगे क्या ?

हज़रते-नासेह गर आएं दीदा-औ-दिल फरशे-राह
कोई मुझको यह तो समझा दो समझायेंगे क्या

आज वां तेगो-कफ़न बांधे हुए जाता हूं मैं
उजर मेरे कतल करने में वो अब लायेंगे क्या

गर कीया नासेह ने हमको कैद अच्छा ! यूं सही
ये जुनेने-इशक के अन्दाज़ छूट जायेंगे क्या

खाना-जादे-ज़ुल्फ़ हैं, ज़ंजीर से भागेंगे कयों
हैं गिरिफ़तारे-वफ़ा, जिन्दां से घबरायेंगे क्या

है अब इस माअमूरा में कहते (कहरे)-ग़ामे-उलफ़त 'असद'
हमने यह माना कि दिल्ली में रहें खायेंगे क्या

(नोट=कई जगह 'भरते तलक' की जगह
'भरने तलक' भी लिखा मिलता है)



8. दिल ही तो है न संग-ओ-खिशत

दिल ही तो है न संग-ओ-खिशत दर्द से भर न आये कयों
रोएंगे हम हज़ार बार कोई हमें सताये कयों

दैर नहीं, हरम नहीं, दर नहीं, आसतां नहीं
बैठे हैं रहगुज़र पे हम, गैर हमें उठाये कयों

जब वो जमाल-ए-दिलफ़रोज़, सूरते-मेहे-नीमरोज़
आप ही हो नज़ारा-सोज़, परदे में मुंह छिपाये कयों

दशना-ए-गमज़ा जां-सतां, नावक-ए-नाज़ बे-पनाह
तेरा ही अकस-ए-रुख़ सही, सामने तेरे आये कयों

कैदे-हयातो-बन्दे-गम असल में दोनों एक हैं
मौत से पहले आदमी गम से निजात पाये कयों

हुसन और उसपे हुसन-ए-जन रह गई बुल-हवस की शरम
अपने पे एतमाद है गैर को आजमाये कयों

वां वो गुरूर-ए-इज़ज़-ओ-नाज़ यां ये हिजाब-ए-पास-ए-वज़अ
राह में हम मिलें कहां, बज़म में वो बुलाये कयों

हां वो नहीं खुदापरसत, जायो वो बेवफ़ा सही
जिसको हो दीन-ओ-दिल अज़ीज़, उसकी गली में जाये कयों



'गालिब'-ए-खसता के बगैर कौन से काम बन्द हैं
रोड्ये ज्ञार-ज्ञार क्या, कीजिये हाय-हाय कर्यों



9. घर हमारा जो न रोते भी तो वीरां होता

घर हमारा जो न रोते भी तो वीरां होता
बहर गर बहर न होता तो बयाबां होता

तंगी-ए-दिल का गिला क्या ये वो काफ़िर दिल है
कि अगर तंग न होता तो परेशां होता

वादे-यक उम्र-वराय बार तो देता बारे
काश रिज्वां ही दरे-यार का दरबां होता



10. है बस कि हर इक उनके इशारे में निशां और

है बस कि हर इक उनके इशारे में निशां और
करते हैं मुहब्बत तो गुजरता है गुमां और

या रब वो न समझे हैं न समझेंगे मेरी बात
दे और दिल उनको जो न दे मुझको ज़ुबां और

अबरू से है क्या उस निगाहे-नाज़ को पैबन्द
है तीर मुकररर मगर उसकी है कमां और

तुम शहर में हो तो हमें क्या ग़ाम जब उठेंगे
ले आयेंगे बाज़ार से जाकर दिल-ओ-जां और

हरचन्द सुबुकदसत हुए बुत शिकनी में
हम हैं तो अभी राह में हैं संगे-गिरां और

है ख़ूने-जिगर जोश में दिल खोल के रोता
होते जो कई दीदा-ए-खून्नाबफ़िशां और

मरता हूं इस आवाज़ पे हरचन्द सर उड़ जाए
जल्लाद को लेकिन वो कहे जायें कि हां और

लोगों को है ख़ुरशीदे-जहां-ताब का धोका
हर रोज दिखाता हूं मैं इक दागे-नेहां और



लेता न अगर दिल तुमहें देता कोई दम चैन
करता जो न मरता कोई दिन आहो-फुगां और

पाते नहीं जब राह तो चढ़ जाते हैं नाले
रुकती है मेरी तबय तो होती है रवां और

हैं और भी दुनिया में सुखनवर बहुत अच्छे
कहते हैं कि 'ग़ालिब' का है अन्दाज़े-बयां और



11. हर इक बात पे कहते हो तुम कि तू क्या है

हर इक बात पे कहते हो तुम कि तू क्या है
तुमहीं कहो कि ये अन्दाज़े-गुफ्तगू क्या है

न शोले में ये करिशमा न बरक में ये अदा
कोई बतायो कि वो शोखे-तुन्द-खू क्या है

ये रशक है कि वो होता है हमसुखन तुमसे
वरना खौफ़-ए-बद-आमोज़ीए-अदू क्या है

चिपक रहा है बदन पर लहू से पैराहन
हमारी जैब को अब हाजते-रफ़ू क्या है

जला है जिसम जहां, दिल भी जल गया होगा
कुरेदते हो जो अब राख, जुसतजू क्या है

स्त्राँ में दौड़ने-फिरने के हम नहीं कायल
जब आंख ही से न टपका तो फिर लहू क्या है

वो चीज़ जिसके लिये हमको हो बहशत अज़ीज़
सिवाये वादा-ए-गुलफ़ाम-ए-मुशक बू क्या है

पीयूं शराब अगर खुम भी देख लूं देचार
ये शीशा-ओ-कदह-ओ-कूज़ा-ओ-सुबू क्या है



रही न ताकते-गुफतार और अगर हो भी
तो किस उम्मीद पे कहये कि आरजू क्या है

हुआ है शह का मुसाहब फिरे है इतराता
वगरना शहर में 'ग़ालिब' की आबरू क्या है



12. जहां तेरा नक्शे-कदम देखते हैं

जहां तेरा नक्शे-कदम देखते हैं
खियाबां खियाबां इरम देखते हैं

दिल आशुफ़तगा खाले-कुंजे-दहन के
सुवैदा में सैरे-अदम देखते हैं

तिरे सरवे-कामत से, इक कद्दे-आदम
कयामत के फितने को कम देखते हैं

तमाशा कर ऐ महवे-आईनादारी
तुझे किस तमन्ना से हम देखते हैं

सुरागे-तुफ़े-नाला ले दागे-दिल से
कि शब-रौ का नक्शे-कदम देखते हैं

बना कर फ़कीरों का हम भेस, 'गालिब'
तमाशा-ए-अहले-करम देखते हैं



13. की वफ़ा हमसे तो गैर उसको जफ़ा कहते हैं

की वफ़ा हमसे तो गैर उसको जफ़ा कहते हैं
होती आई है कि अच्छों को बुरा कहते हैं

आज हम अपनी परेशानी-ए-खातिर उनसे
कहने जाते तो हैं, पर देखीए क्या कहते हैं

अगले वकतों के हैं ये लोग इनहें कुछ न कहो
जो मै-ओ-नग़मा को अन्दोहरुबा कहते हैं

दिल में आ जाये है होती है जो फुरसत ग़ाम से
और फिर कौन से नाले को रसा कहते हैं

है परे सरहदे-इदराक से अपना मसजूद
किबले को अहले-नज़र किबला नुमा कहते हैं

पाए-अफ़गार पे जब तुझे रहम आया है
खारे-रह को तेरे हम मेहर गिया कहते हैं

इक शरर दिल में है उससे कोई घबराएगा क्या
आग मतलूब है हमको जो हवा कहते हैं

देखीए लाती है उस शोख की नखवत क्या रंग
उसकी हर बात पे हम नामे-खुदा कहते हैं



वहशत-ओ-शोफ्ता अब मरसीया कहवें शायद
मर गया ग़ालिब-ए-आसुफ्ता-नवा कहते हैं



14. कोई उम्मीद बर नहीं आती

कोई उम्मीद बर नहीं आती
कोई सूरत नज़र नहीं आती

मौत का एक दिन मुअव्वन है
नींद कयों रात भर नहीं आती

आगे आती थी हाले-दिल पे हँसी
अब किसी बात पर नहीं आती

जानता हूं सवाबे-ताअत-ओ-ज़ोहद
पर तबीयत इधर नहीं आती

है कुछ ऐसी ही बात जो चुप हूं
वरना क्या बात कर नहीं आती

कयों न चीखूं कि याद करते हैं
मेरी आवाज़ गर नहीं आती

दागे-दिल गर नज़र नहीं आता
बू भी ऐ बूए चारागर नहीं आती

हम वहां हैं जहां से हमको भी
कुछ हमारी खबर नहीं आती



मरते हैं आरजू में मरने की
मौत आती है पर नहीं आती

काबा किस मूँह से जाओगे 'ग़ालिब'
शरम तुमको मगर नहीं आती



15. मेहरबां हो के बुला लो मुझे चाहो जिस वकत

मेहरबां हो के बुला लो मुझे चाहो जिस वकत
मैं गया वकत नहीं हूँ कि फिर आ भी न सकूँ

जोफ़ में ताना-ए-अश्यार का शिकवा क्या है
बात कुछ सर तो नहीं है कि उठा भी न सकूँ

ज़हर मिलता ही नहीं मुझको सितमगर वरना
क्या कसम है तिरे मिलने की कि खा भी न सकूँ



16. मेरे शौक दा नहीं इतबार तैनूं

(मिरज़ा ग़ालिब दी फ़ारसी रचना दा अनुवाद)

मेरे शौक दा नहीं इतबार तैनूं
आजा वेख मेरा इंतज़ार आजा ।
ऐवें लड़न बहानने लभ्भना एं,
की तूं सोचना एं सितमगार आजा ।

भावें हिजर ते भावें विसाल होवे,
वक्खो वक्ख दोहां दियां लज्जतां ने,
मेरे सोहण्यां जाह हज़ार वारी,
आजा प्यार्या ते लक्ख वार आजा ।

इह रिवाज़ ए मसजिदां मन्दरां दा
ओथे हसतियां ते खुद-प्रसतियां ने,
मैखाने विच्च मसतियां ई मसतियां ने
होश कर बणके हुश्यार आजा ।

तूं सादा ते तेरा दिल सादा
तैनूं ऐवें रकीब कुराह पायआ
जे तूं मेरे जनाजे ते नहीं आया
राह तक्कदै तेरी मज़ार आजा ।



सुकर्खीं वस्सना जे तूं चाहुना एं
मेरे 'ग़ालिबा' एस जहान अन्दर,
आजा रिन्दां दी बज्रम विच्च आ बहजा,
इत्थे बैठदे ने ख़ाकसार आजा ।



17. नक्श फरियादी है किसकी शोखी-ए- तहरीर का

नक्श फरियादी है किसकी शोखी-ए-तहरीर का
काग़ाज़ी है पैरहन हर पैकर-ए-तसवीर का

कावे-कावे सख्तजानीहा-ए-तनहायी न पूछ
सुबह करना शाम का लाना है जू-ए-शीर का

ज़ज़बा-ए-बेइखतयारे-शौक देखा चाहीए
सीना-ए-शमशीर से बाहर है दम शमशीर का

आगही दाम-ए-शनीदन जिस कदर चाहे बिछाए
मुद्दआ अंका है अपने आलमे-तकरीर का

बस कि हूं 'ग़ालिब' असीरी में भी आतिश ज़ेरे-पा
मू-ए-आतिश-दीदा है हलका मेरी ज़ंजीर का



18. न था कुछ तो खुदा था, कुछ न होता तो खुदा होता

न था कुछ तो खुदा था, कुछ न होता तो खुदा होता
डुबोया मुझको होने ने, न होता मैं तो क्या होता

हुआ जब ग़ाम से यूं बेहस तो ग़ाम क्या सर के कटने का
न होता गर जुदा तन से, तो जानूं पर धरा होता

हुयी मुहत कि 'ग़ालिब' मर गया, पर याद आता है
वो हर इक बात पर कहना कि यूं होता तो क्या होता



19. नुकतार्चीं है, ग़मे-दिल उसको सुनाये न बने

नुकतार्चीं है, ग़मे-दिल उसको सुनाये न बने
क्या बने बात, जहां बात बनाये न बने

मैं बुलाता तो हूं उसको, मगर ऐ ज़ज़बा-ए-दिल
उस पे बन जाए कुछ ऐसी, कि बिन आये न बने

खेल समझा है, कहीं छोड़ न दे भूल न जाये
काश ! यों भी हो कि बिन मेरे सताये न बने

गैर फिरता है, लिये यों तेरे ख़त को कि अगर
कोई पूछे कि ये क्या है, तो छुपाये न बने

इस नज़ाकत का बुरा हो, वो भले हैं तो क्या
हाथ आयें, तो उनहें हाथ लगाये न बने

कह सके कौन कि ये जलवागरी किसकी है
परदा छोड़ा है वो उसने कि उठाये न बने

मौत की राह न देखूं कि बिन आये न रहे
तुम को चाहूं कि न आयो, तो बुलाये न बने

बोझ वो सर से गिरा है कि उठाये न उठे
काम वो आन पड़ा है कि बनाये न बने



इशक पर ज्ञोर नहीं, है ये वो आतश 'ग़ालिब'
कि लगाये न लगे और बुझाये न बने



20. फिर मुझे दीदा-ए-तर याद आया

फिर मुझे दीदा-ए-तर याद आया
दिल जिगर तिशना-ए-फरियाद आया

दम लीया था न क्यामत ने हनोज़
फिर तेरा वकते-सफ़र याद आया

सादगी-हाए-तमन्ना, यानी
फिर वो नौरंगे-नज़र याद आया

उज्जरे-वा-मांदगी ऐ हसरते-दिल
नाला करता था जिगर याद आया

ज़िन्दगी यों भी गुज़र ही जाती
क्यों तेरा राहगुज़र याद आया

क्या ही रिज़वां से लड़ायी होगी
घर तेरा खुलद में गर याद आया

आह वो जुररत-ए-फरियाद कहां
दिल से तंग आ के जिगर याद आया

फिर तेरे कूचे को जाता है ख़्याल
दिले-गुंमगशता मगर याद आया



कोई वीरानी सी वीरानी है
दशत को देख के घर याद आया

मैंने मजनूं पे लड़कपन में 'असद'
संग उठाया था कि सर याद आया



21. रहीये अब ऐसी जगह चलकर, जहां कोई न हो

रहीये अब ऐसी जगह चलकर, जहां कोई न हो
हम-सुखन कोई न हो और हम जुबां कोई न हो

बेदरो-दीवार सा इक घर बनाया चाहिये
कोई हमसाया न हो और पासबां कोई न हो

पड़ीये गर बीमार, तो कोई न हो तीमारदार
और अगर मर जाईये, तो नौहा ख्वां कोई न हो



22. शौक हर रंग, रकीबे-सरो-सामां निकला

शौक हर रंग, रकीबे-सरो-सामां निकला
कैस तसवीर के परदे में भी उरीयां निकला

ज़ख्म ने दाद न दी तंगीए-दिल की या रब
तीर भी सीना-ए-बिसमिल से पर-अफ़शां निकला

बूए-गुल, नाला-ए-दिल, दूदे-चरागो-महफ़िल
जो तिरी बज़म से निकला, सो परीशां निकला

दिले-हसरतज़दा था मायद-ए-लज़ज़ते-दर्द
काम यारों का, बकदरे-लबो-दन्दां निकला

है नौआमोज़े-फ़ना, हिंमते-दुशवार-पसन्द
सख्त मुशकिल है, कि यह काम भी आसां निकला

दिल में फिर गिरीए ने जोर (शोर) उठाया, 'ग़ालिब'
आह जो कतरा न निकला था, सो तूफ़ां निकला



23. ये हम जो हिजर में दीवार-ओ-दर को देखते हैं

ये हम जो हिजर में दीवार-ओ-दर को देखते हैं
कभी सबा तो कभी नामाबर को देखते हैं

वो आये घर में हमारे खुदा की कुदरत है
कभी हम उनको कभी अपने घर को देखते हैं

नज़र लगे न कहीं उसके दस्त-ओ-बाज़ू को
ये लोग क्यों मेरे झर्ख-ए-जिगर को देखते हैं

तेरे जवाहर-ए-तरफ़-ए-कुलह को क्या देखें
हम औज-ए-ताला-ए-लाल-ओ-गुहर को देखते हैं



24. ये न थी हमारी किस्मत कि विसाले- यार होता

ये न थी हमारी किस्मत कि विसाले-यार होता
अगर और जीते रहते यही इंतज़ार होता

तेरे वादे पे जीये हम तो ये जान झूठ जाना
कि खुशी से मर न जाते अगर ऐतबार होता

तेरी नाज़ुकी से जाना कि बंधा था अहद बोदा
कभी तू न तोड़ सकता अगर उस्तुवार होता

कोई मेरे दिल से पूछे तेरे तीरे-नीमकश को
ये खलिश कहां से होती जो जिगर के पार होता

ये कहां की दोस्ती है कि बने हैं दोसत नासेह
कोई चारासाज़ होता, कोई गमगुसार होता

रगे-संग से टपकता वे लहू कि फिर न थमता
जिसे गम समझ रहे हो ये अगर शरार होता

गम अगरचे जां-गुसिल है, पर कहां बचे कि दिल है
ग़मे-इशक 'गर न होता, ग़मे-रोज़गार होता

कहूँ किससे मैं कि क्या है, शबे-गम बुरी बला है
मुझे क्या बुरा था मरना ? अगर एक बार होता



हुए मर के हम जो रुसवा, हुए कयों न गरके-दरिया
न कभी जनाझा उठता, न कहीं मज़ार होता

उसे कौन देख सकता, कि यग़ाना है वो यकता
जो दुयी की बू भी होती तो कहीं दो चार होता

ये मसाईले-तसव्वुफ़, ये तेरा बयान 'ग़ालिब'
तुझे हम वली समझते, जो न बादाख़वार होता



25. वो फ़िराक और वो विसाल कहां

वो फ़िराक और वो विसाल कहां
वो शब-ओ-रोज़-ओ-माह-ओ-साल कहां

फुरसत-ए-कारोबार-ए-शौक किसे
जौक-ए-नज्ज़ारा-ए-जमाल कहां

दिल तो दिल वो दिमाग भी न रहा
शोर-ए-सौदा-ए-खत्त-ओ-खाल कहां

थी वो इक शख्स के तसव्वुर से
अब वो रानाई-ए-खयाल कहां

ऐसा आसां नहीं लहू रोना
दिल में ताकत जिगर में हाल कहां

हमसे छूटा किमारखाना-ए-इशक
वां जो जावें, गिरह में माल कहां

फ़िक्र-ए-दुनिया में सर खपाता हूं
मैं कहां और ये वबाल कहां

मुज्जमंहल हो गये कुवा 'ग़ालिब'
वो अनासिर में एतदाल कहां



26. न गुल-ए-नगमा हूं

न गुल-ए-नगमा हूं, न परदा-ए-साज़
मैं हूं अपनी शिक्षसत की आवाज़

तू और आरायश-ए-ख़म-ए-काकुल
मैं, और अन्देशा-हाए-दूरो-दराज़

लाफ-ए-तमकीं फरेब-ए-सादा-दिली
हम हैं, और राज़ हाए-सीना-ए-गुदाज़

हूं गिरफ़तारे उलफ़त-ए-सैयाद
वरना बाकी है ताकते परवाज़

वो भी दिन हो कि उस सितमगर से
नाज़ खींचूं बजाय हसरते-नाज़

नहीं दिल में तेरे वो कतरा-ए-ख़ूं
जिस से मिज़गां हुयी न हो गुलबाज़

मुझको पूछा तो कुछ ग़ज़ब न हुआ
मैं ग़रीब और तू ग़रीब-नवाज़

असदुललाह ख़ाँ तमाम हुआ
ऐ दरेगा वह रिन्द-ए-शाहदबाज़



27. ज़िक्र उस परीवश का और फिर बयां अपना

ज़िक्र उस परीवश का और फिर बयां अपना
बन गया रकीब आखिर था जो राजदां अपना

मय वो क्यों बहुत पीते बज़म-ए-गैर में, यारब
आज ही हुआ मंज़र उनको इमतहां अपना

मंज़र इक बुलन्दी पर और हम बना सकते
अरश से उधर होता काश के मकां अपना

दे वो जिस कदर ज़िल्लत हम हँसी में टालेंगे
बारे आशना निकला उनका पासबां अपना

दर्द-ए-दिल लिखूँ कब तक जाऊँ उन को दिखला दूँ
उंगलियां फ़िगार अपनी खामा खूँचकां अपना

घिसते-घिसते मिट जाता आप ने अबस बदला
नंग-ए-सिजदा से मेरे संग-ए-आसतां, अपना

ता करे न ग़म्माज़ी, कर लिया है दुशमन को
दोसत की शिकायत में हम ने हमज़बां अपना

हम कहां के दाना थे, किस हुनर में यकता थे
बेसबब हुआ 'ग़ालिब' दुशमन आसमां अपना



28. सब कहां ? कुछ लाला-ओ-गुल में नुमायां हो गई

सब कहां ? कुछ लाला-ओ-गुल में नुमायां हो गई
खाक में क्या सूरतें होंगी कि पिनहां हो गई

याद थी हमको भी रंगा-रंग बज्रमआराययां
लेकिन अब नक्श-ओ-निगार-ए-ताक-ए-निसियां हो गई

थीं बनातुन्नाश-ए-गरदूं दिन को परदे में नेहां
शब को उनके जी में क्या आई कि उरियां हो गई

कैद से याकूब ने ली गो न यूसुफ़ की खबर
लेकिन आंखें रौजन-ए-दीवार-ए-जिन्दां हो गई

सब रकीबों से हों नाखुश, पर ज्ञान-ए-मिस्त्र से
है ज़ुलेखा खुश कि महके-माह-ए-कनआं हो गई

जू-ए-खूं आंखों से बहने दो कि है शाम-ए-फिराक
मैं ये समझूंगा के दो शमअएं फरोज़ां हो गई

इन परीजादों से लेंगे खुलद में हम इंतकाम
कुदरत-ए-हक से यही हूरें अगर वां हो गई



नींद उसकी है, दिमाग़ उसका है, रातें उसकी हैं
तेरी ज़ुल्फ़ें जिसके बाज़ू पर परीशां हो गई

मैं चमन में क्या गया, गोया दबिसतां खुल गया
बुलबुलें सुन कर मेरे नाले ग़ज़ल़ख्वां हो गई

वो निगाहें कयों हुयी जाती हैं यारब दिल के पार
जो मेरी कोताही-ए-किस्मत से मिज़गां हो गई

बस कि रोका मैंने और सीने में उभरीं पै-ब-पै
मेरी आहें बख़िया-ए-चाक-ए-गरीबां हो गई

वां गया भी मैं, तो उनकी गालियों का क्या जवाब ?
याद थीं जितनी दुआयें, सरफ़-ए-दरबां हो गई

जां-फ़िज़ां है बादा, जिसके हाथ में जाम आ गया
सब लकीरें हाथ की गोया रग-ए-जां हो गई

हम मुवहद हैं, हमारा केश है तरक-ए-रूसूम
मिल्लतें जब मिट गई, अज़ज़ा-ए-ईमां, हो गई

रंज से खूगर हुआ इनसां तो मिट जाता है रंज
मुशिकलें मुझ पर पड़ीं इतनी कि आसां हो गई

यूं ही गर रोता रहा 'ग़ालिब', तो ऐ अहल-ए-जहां !
देखना इन बसितयों को तुम, कि वीरां हो गई



29. मज्जे जहान के अपनी नज़र में खाक नहीं

मज्जे जहान के अपनी नज़र में खाक नहीं
सिवाए खून-ए-जिगर, सो जिगर में खाक नहीं

मगर गुबार हुए पर हवा उड़ा ले जाये
वगरना ताब-ओ-तबां बालो-पर में खाक नहीं

ये किस बहशत-शमायल की आमद-आमद है ?
कि गैर-ए-जलवा-ए-गुल रहगुजर में खाक नहीं

भला उसे न सही, कुछ मुझी को रहम आता
असर मेरे नफ़स-ए-बेअसर में खाक नहीं

खयाल-ए-जलवा-ए-गुल से खराब है मयकश
शराबखाने के दीवार-ओ-दर में खाक नहीं

हुआ हूं इशक की ग़ारतगरी से शरिमन्दा
सिवाय हसरत-ए-तामीर घर में खाक नहीं

हमारे शोर हैं अब सिरफ़ दिल-लगी के "असद"
खुला कि फ़ायदा अरज़-ए-हुनर में खाक नहीं



30. मसजिद के ज़ेर-ए-साया ख़राबात चाहिये

मसजिद के ज़ेर-ए-साया ख़राबात चाहिये
भौं पास आंख किबला-ए-हाजात चाहिये

आशिक हुए हैं आप भी एक और शख्स पर
आखिर सितम की कुछ तो मुकाफ़ात चाहिये

दे दाद ऐ फ़लक दिल-ए-हसरत-परसत की
हां कुछ न कुछ तलाफ़ी-ए-माफ़ात चाहिये

सीखे हैं मह-रुखों के लिए हम मुसव्वरी
तकरीब कुछ तो बहर-ए-मुलाकात चाहिये

मय से ग़रज़ नशात है किस रु-सियाह को
इक-गूना बे-खुदी मुझे दिन रात चाहिये

है रंग-ए-लाला-ओ-गुल-ओ-नसरीं जुदा जुदा
हर रंग में बहार का इसबात चाहिये

सर पा-ए-खुम पे चाहिये हंगाम-ए-बे-खुदी
रु सू-ए-किबला वकत-ए-मुनाजात चाहिये

यानी ब-हसब-ए-गरिदश-ए-पैमान-ए-सिफ़ात
आरिफ़ हमेशा मसत-ए-मय-ए-ज़ात चाहिये



नशव-ओ-नुमा है असल से "ग़ालिब" फ़ुरू को
खामोशी ही से निकले हैं जो बात चाहिये



31. ग़म-ए-दुनिया से गर पायी भी फुरसत

ग़म-ए-दुनिया से गर पायी भी फुरसत सर उठाने की
फ़लक का देखना तकरीब तेरे याद आने की

खुलेगा किस तरह मज्जमूं मेरे मकतूब का यारब
कसम खायी है उस काफ़िर ने काग़ज के जलाने की

लिपटना परनियां में शोला-ए-आतिश का आसां है
वले मुशिकल है हिकमत दिल में सोज-ए-ग़म छुपाने की

उन्हें मंज़ूर अपने ज़ख्मों का देख आना था
उठे थे सैर-ए-गुल को देखना शोखी बहाने की

हमारी सादगी थी इलतफ़ात-ए-नाज़ पर मरना
तेरा आना न था ज़ालिम मगर तमहीद जाने की

लकद कूब-ए-हवादिस का तहम्मुल कर नहीं सकती
मेरी ताकत कि ज़ामिन थी बुतों के नाज़ उठाने की

कहूं क्या ख़ूबी-ए-औज़ा-ए-अबना-ए-ज़मां 'ग़ालिब'
बदी की उसने जिस से हमने की थी बारहा नेकी



32. चाहिये, अच्छों को जितना चाहिये

चाहिये, अच्छों को जितना चाहिये
ये अगर चाहें, तो फिर क्या चाहिये

सोहबत-ए-रिन्दां से वाजिब है हज़र
जा-ए-मै अपने को खींचा चाहिये

चाहने को तेरे क्या समझा था दिल
बारे, अब इस से भी समझा चाहिये

चाक मत कर जैब बे-अव्याम-ए-गुल
कुछ उधर का भी इशारा चाहिये

दोसती का परदा है बेगानगी
मुंह छुपाना हम से छोड़ा चाहिये

दुशमनी में मेरी खोया गैर को
किस कदर दुशमन है, देखा चाहिये

अपनी, रुसवायी में क्या चलती है सअई
यार ही हंगामाआरा चाहिये

मुन्हसिर मरने पे हो जिस की उमीद
नाउमीदी उस की देखा चाहिये



गाफिल, इन महतलअतों के वासते
चाहने वाला भी अच्छा चाहिये

चाहते हैं खूब-रुयों को, 'असद'
आप की सूरत तो देखा चाहिये



33. हर कदम दूरी-ए-मंजिल है नुमायां मुझ से

हर कदम दूरी-ए-मंजिल है नुमायां मुझ से
मेरी रफ़तार से भागे है बयाबां मुझ से

दरस-ए-उनवान-ए-तमाशा ब-तशाफुल खुशतर
है निगह रिशता-ए-शीराज्ञा-ए-मिज्जगां मुझ से

वहशत-ए-आतिश-ए-दिल से शब-ए-तनहायी में
सूरत-ए-दूद रहा साया गुरेजां मुझ से

ग़म-ए-उशशाक, न हो सादगी-आमोज़-ए-बुतां
किस कदर खाना-ए-आईना है वीरां मुझ से

असर-ए-आबला से जाद-ए-सहरा-ए-जुनूं
सूरत-ए-रिशता-ए-गौहर है चिरागां मुझ से

बे-खुदी बिस्तर-ए-तमहीद-ए-फ़रागत हो जो
पुर है साए की तरह मेरा शबिसतां मुझ से

शौक-ए-दीदार में गर तू मुझे गरदन मारे
हो निगह मिसल-ए-गुल-ए-शमय परेशां मुझ से

बेकसी हा-ए-शब-ए-हज़र की वहशत, है है
साया खुरशीद-ए-कयामत में है पिनहां मुझ से



गरिदश-ए-सागर-ए-सद-जलवा-ए-रंगीं तुझ से
आईना-दारी-ए-यक-दीदा-ए-हैरां मुझ से

निगह-ए-गरम से इक आग टपकती है "असद"
है चिराग़ीं खस-ओ-खाशाक-ए-गुलिसतां मुझ से

बसतन-ए-अहद-ए-मुहब्बत हमा ना-दानी था
चशम-ए-नाकुशूदा रहा उकदा-ए-पैमां मुझ से

आतिशा-अफरोज़ी-ए-यक-शोला-ए-ईमा तुझ से
चशमक-आराई-ए-सद-शहर चिराग़ीं मुझ से



34. वो आके ख्वाब में तसकीन-ए- इज़तिराब तो दे

वो आके ख्वाब में तसकीन-ए-इज़तिराब तो दे
वले मुझे तपिश-ए-दिल मजाल-ए-ख्वाब तो दे

करे है कतल, लगावट में तेरा रो देना
तेरी तरह कोई तेझे-निगह की आब तो दे

दिखा के जुम्बिश-ए-लब ही तमाम कर हमको
न दे जो बोसा, तो मुंह से कहीं जवाब तो दे

पिला दे ओक से साकी, जो हमसे नफरत है
पयाला गर नहीं देता न दे, शराब तो दे

'असद' खुशी से मेरे हाथ-पांव फूल गए
कहा जो उसने, ज़रा मेरे पांव दाब तो दे



35. फ़रियाद की कोई लै नहीं है

फ़रियाद की कोई लै नहीं है
नाला पाबन्द-ए-नै नहीं है

क्यूं बोते हैं बाग़-बान तूम्बे
गर बाग़ गदा-ए-मै नहीं है

हर-चन्द हर एक शै में तू है
पर तुझा-सी कोई शै नहीं है

हां, खाययो मत फ़रेब-ए-हसती
हर-चन्द कहें कि "है", नहीं है

शादी से गुज़र, कि ग़म न रहवे
उरदी जो न हो, तो दै नहीं है

क्यूं रझ-ए-कदह करे है, ज़ाहद
मै है ये, मगस की कै नहीं है

हसती है न कुछ अदम है "ग़ालिब"
आखिर तू क्या है, ए "नहीं" है



36. जु़ज कैस और कोई न आया ब-रू- ए-कार

जु़ज कैस और कोई न आया ब-रू-ए-कार
सहरा मगर ब-तंगी-ए-चशम-ए-हसूद था

आशुफ़तगी ने नक्श-ए-सवैदा किया दुरुसत
ज़ाहर हुआ कि दाग का सरमाया दूद था

था ख़वाब में ख़याल को तुझसे मुआमला
जब आंख खुल गई न ज़ियां था न सूद था

लेता हूं मकतबे-ग़मे-दिल में सबक हनूज़
लेकिन यही कि रफ़त गया और बूद था

ढांपा कफ़न ने दागे-अयूबे-बरहनगी
मैं वरना हर लिबास में नंगे-वजूद था

तेशे बगैर मर न सका कोहकन "असद"
सरगशता-ए-खुमारे-रुसूम-ओ-कयूद था

पाठ भेद

आलम जहाँ ब-अरज़-ए-बिसात-ए वजूद था
जूं सुबह चाक-ए-जेब मुझे तार-ओ-पूद था



बाजी-खुर-ए-फरेब है अहल-ए-नजर का जौक
हंगामा गरम-ए-हैरत-ए-बूद-ओ-नुमूद था

आलम तिलिसम-ए-शहर-ए-खामोशां है सर-ब-सर
या मैं ग़ारीब-ए-किशवर-ए-गुफ्त-ओ-सुनूद था

तंगी रफ़ीक-ए-राह थी अदम या वजूद था

मेरा सफ़र ब-ताला-ए-चशम-ए-हसूद था

तू यक-जहां कुमाश-ए-हवस जमय कर कि मैं
हैरत मता-ए-आलम-ए-नुकसान-ओ-सूद था

गरदिश-मुहीत-ए-ज़ुलम रहा जिस कदर फ़लक
मैं पा-एमाल-ए-ग़ामज़ा-ए-चशम-ए-कबूद था

पूछा था गरचे यार ने अहवाल-ए-दिल मगर
किस को दिमाश-ए-मिन्नत-ए-गुफ्त-ओ-शुनूद था

खुर शब्नम-आशना ना हुआ वरना मैं 'असद'
सर-ता-कदम गुजारिश-ए-जौक-ए-सुजूद था



37. कहते हो, न देंगे हम, दिल अगर पड़ा पाया

कहते हो, न देंगे हम, दिल अगर पड़ा पाया
दिल कहां कि गुम कीजे ? हमने मुद्दआ पाया

इशक से तबियत ने ज़ीसत का मज्जा पाया
दर्द की दवा पाई, दर्द बे-दवा पाया

दोसत दारे-दुशमन हैं, एतमादे-दिल मालूम
आह बेअसर देखी, नाला नारसा पाया

सादगी व पुरकारी बेखुदी व हुशियारी
हुसन को तगाफुल में जुरअत-आज्मा पाया

गुंचा फिर लगा खिलने, आज हम ने अपना दिल
खूं किया हुआ देखा गुम किया हुआ पाया

हाल-ए-दिल नहीं मालूम, लेकिन इस कदर यानी
हम ने बारहा ढूँढा, तुम ने बारहा पाया

शोर-ए-पन्दे-नासह ने ज़ख्म पर नमक छिड़का
आप से कोई पूछे, तुम ने क्या मज्जा पाया

ना असद जफ़ा-सायल ना सितम जुनून-मायल
तुझ को जिस कदर ढूँढा उलफ़त-आज्मा पाया



38. दहर में नक्श-ए-वफ़ा वजह-ए- तसल्ली न हुआ

दहर में नक्श-ए-वफ़ा वजह-ए-तसल्ली न हुआ
है यह वो लफ़ज़ कि शरमिन्दा-ए-माअनी न हुआ

सबज्ञा-ए-ख़त से तेरा काकुल-ए-सरकश न दबा
यह ज़मुरद भी हरीफ़े-दमे-अफ़यी न हुआ

मैंने चाहा था कि अन्दोह-ए-वफ़ा से छूटूं
वह सितमगर मेरे मरने पे भी राज़ी न हुआ

दिल गुज़रगाह-ए-ख़याले-मै-ओ-साशर ही सही
गर नफ़स जादा-ए-सर-मंज़िल-ए-तकवी न हुआ

हूं तेरे वादा न करने में भी राज़ी कि कभी
गोश मिन्नत-कशे-गुलबांग-ए-तसल्ली न हुआ

किससे महरूमी-ए-किस्मत की शिकायत कीजे
हम ने चाहा था कि मर जाएं, सो वह भी न हुआ

मर गया सदमा-ए-यक-जुम्बिशे-लब से 'ग़ालिब'
ना-तवानी से हरीफ़-ए-दम-ए-ईसा न हुआ



39. सतायश गर है ज्ञाहद इस कदर जिस बागे-रिजवां का

सतायश गर है ज्ञाहद इस कदर जिस बागे-रिजवां का
वह इक गुलदसता है हम बेखुदों के ताके-निसियां का

बयां क्या कीजिये बेदादे-काविश-हाए-मिज्गां का
कि हर इक कतरा-ए-खूं दाना है तसबीहे-मरजां का

न आई सतवते-कातिल भी मानय मेरे नालों को
लिया दांतों में जो तिनका, हुआ रेशा नैसतां का

दिखाऊंगा तमाशा, दी अगर फुरसत ज़माने ने
मेरा हर दागा-ए-दिल इक तुखम है सरव-ए-चिरागां का

किया आईनाखाने का वो नक्शा तेरे जलवे ने
करे जो परतव-ए-खुरशीद-आलम शबनमिसतां का

मेरी तामीर में मुज्जमिर है इक सूरत खराबी की
हयूला बरक-ए-खिरमन का है खून-ए-गरम दहकां का

उगा है घर में हर-सू सबज्जा, वीरानी, तमाशा कर
मदार अब खोदने पर घास के, है मेरे दरबां का

खमोशी में नेहां खुंगशता लाखों आरज्जूएं हैं
चिरागा-ए-मुरदा हूं में बेजुबां गोर-ए-गरीबां का



हनूज इक परतव-ए-नकश-ए-ख्याल-ए-यार बाकी है
दिल-ए-अफ़सुरदा गोया हुजरा है यूसुफ़ के जिन्दां का

बगल में गैर की आप आज सोते हैं कहीं, वरना
सबब क्या? ख्वाब में आकर तबस्सुम-हाए-पिनहां का

नहीं मालूम किस-किसका लहू पानी हुआ होगा
कथामत है सरशक-आलूदा होना तेरी मिज्गां का

नज़र में है हमारी जादा-ए-राह-ए-फ़ना 'ग़ालिब'
कि ये शीराज़ा है आलम के अज्जाए-परीशां का



40. महरम नहीं है तू ही नवा-हाए-राज्ज का

महरम नहीं है तू ही नवा-हाए-राज्ज का
यां वरना जो हिजाब है, परदा है साज्ज का

रंगे-शिकसता सुबहे-बहारे-नज़ारा है
ये वकत है शुगुफतने-गुल-हाए-नाज्ज का

तू और सू-ए-गैर नज़र-हाए तेज़-तेज़
मैं, और दुख तेरी मिज़गां-हाए-दराज का

सरफ़ा है ज़बते-आह में मेरा, वगरना मैं
तोअमा हूं एक ही नफ़से-जां-गुदाज्ज का

हैं बस कि जोशे-बादा से शीशे उछल रहे
हर गोशा-ए-बिसात है सर शीशा-बाज का

काविश का दिल करे है तकाज्जा कि है हनूज्ज
नाखुन पे करज इस गिरहे-नीम-बाज का

ताराज-ए-काविशे-गमे-हजरां हुआ "असद"
सीना, कि था दफ़ीना-ए-गुहर-हाए-राज का



41. बजमे-शाहनशाह में अशआर का दफ्तर खुला

बजमे-शाहनशाह में अशआर का दफ्तर खुला
रखियो या रब! यह दरे-गंजीना-ए-गौहर खुला

शब हुयी फिर अंजुमे-रखशन्दा का मंजर खुला
इस तकल्लुफ से कि गोया बुतकदे का दर खुला

गरचे हूँ दीवाना, पर कयों दोसत का खाऊँ फरेब
आसतीं में दशना पिनहां हाथ में नशतर खुला

गो न समझूँ उसकी बातें, गो न पाऊँ उसका भेद
पर यह क्या कम है कि मुझसे वो परी-पैकर खुला

है ख़याले-हुसन में हुसने-अमल का सा ख़याल
खुलद का इक दर है मेरी गोर के अन्दर खुला

मुंह न खुलने पर वो आलम है कि देखा ही नहीं
जुल्फ से बढ़कर नकाब उस शोख के मुंह पर खुला

दर पे रहने को कहा और कह के कैसा फिर गया
जितने अरसे में मेरा लिपटा हुआ बिस्तर खुला

कयों अंधेरी है शबे-गम ? है बलायों का नुजूल
आज उधर ही को रहेगा दीदा-ए-अखतर खुला



क्या रहूं गुरबत में खुश ? जब हो हवादिस का यह हाल
नामा लाता है वतन से नामाबर अकसर खुला

उसकी उम्मत में हूं मैं, मेरे रहें क्यों काम बन्द
वासते जिस शह के 'ग़ालिब' गुम्बदे-बे-दर खुला



42. यक जर्रा-ए-जर्मीं नहीं बेकार बाग़ा का

यक जर्रा-ए-जर्मीं नहीं बेकार बाग़ा का
यां जादा भी फ़तीला है लाले के दाग़ा का

बे-मै किसे है ताकत-ए-आशोब-ए-आगही
खेंचा है अजज़-ए-हौसला ने ख़त अयाग़ा का

बुलबुल के कार-ओ-बार पे हैं खन्दा-हाए-गुल
कहते हैं जिस को इशक खलल है दिमाग़ा का

ताज़ा नहीं है नशा-ए-फ़िकर-ए-सुखन मुझे
तिरयाकी-ए-कदीम हूं दूद-ए-चिराग़ा का

सौ बार बन्द-ए-इशक से आजाद हम हुए
पर क्या करें कि दिल ही अदू है फ़राग़ा का

बे-खून-ए-दिल है चशम में मौज-ए-निगह गुबार
यह मै-कदा खराब है मै के सुराग़ा का

बाग़ा-ए-शगुफ़ता तेरा बिसात-ए-नशात-ए-दिल
अब्र-ए-बहार खुम-कदा किस के दिमाग़ा का



43. हुयी ताखीर तो कुछ बायसे-ताखीर भी था

हुयी ताखीर तो कुछ बायसे-ताखीर भी था
आप आते थे, मगर कोई इनांगीर भी था

तुम से बेजा है मुझे अपनी तबाही का गिला
उसमें कुछ शायबा-ए-खूबी-ए-तकदीर भी था

तू मुझे भूल गया हो, तो पता बतला दूं
कभी फ़ितराक में तेरे कोई नखचीर भी था

कैद में है तेरे वहशी को वही ज़ुल्फ़ की याद
हां कुछ इक रंज-ए-गिरांबारी-ए-ज़ंजीर भी था

बिजली इक कौंध गई आंखों के आगे, तो क्या
बात करते, कि मैं लब-तिशना-ए-तकरीर भी था

यूसुफ़ उस को कहूं और कुछ न कहे, ख़ैर हुई
गर बिगड़ बैठे तो मैं लायक-ए-तअज़ीर भी था

देखकर गैर को हो क्यों न कलेजा ठंडा
नाला करता था वले, तालिब-ए-तासीर भी था



पेशे में ऐब नहीं, रखिये न फरहाद को नाम
हम ही आशुफता-सरों में वो जवां-मीर भी था

हम थे मरने को खड़े, पास न आया न सही
आखिर उस शोख के तरकश में कोई तीर भी था

पकड़े जाते हैं फरिशतों के लिखे पर नाहक
आदमी कोई हमारा दमे-तहरीर भी था

रेखते के तुम्हीं उसताद नहीं हो 'गालिब'
कहते हैं अगले ज़माने में कोई 'मीर' भी था



44. तू दोसत किसी का भी सितमगर न हुआ था

तू दोसत किसी का भी सितमगर न हुआ था
औरों पे है वो ज़ुलम कि मुझ पर न हुआ था

छोड़ा मह-ए-नखशब की तरह दसत-ए-कज्जा ने
खुरशीद हनूज उस के बराबर न हुआ था

तौफ़ीक बअन्दाज़ा-ए-हंमत है अज़ल से
आंखों में है वो कतरा कि गौहर न हुआ था

जब तक की न देखा था कद-ए-यार का आलम
मैं मुअत्किद-ए-फ़ितना-ए-महशर न हुआ था

मैं सादा-दिल, आज़नुरदगी-ए-यार से खुश हूं
यानी सबक-ए-शौक मुकर्रर न हुआ था

दरिया-ए-मआसी तुनुक-आबी से हुआ खुशक
मेरा सर-ए-दामन भी अभी तर न हुआ था

जारी थी 'असद' दाग-ए-जिगर से मेरी तहसील
आतिशकदा जागीर-ए-समन्दर न हुआ था



45. अरज़-ए-नियाज़-ए-इशक के काबिल नहीं रहा

अरज़-ए-नियाज़-ए-इशक के काबिल नहीं रहा
जिस दिल पे नाज़ था मुझे, वो दिल नहीं रहा

जाता हूं दाग़-ए-हसरत-ए-हसती लिये हुए
हूं शमअ-ए-कुशता दरखुर-ए-महफ़िल नहीं रहा

मरने की ऐ दिल और ही तदबीर कर कि मैं
शायाने-दसत-ओ-खंजर-ए-कातिल नहीं रहा

बर-रू-ए-शश-जहत दर-ए-आईनाबाज़ है
यां इमतियाज़-ए-नाकिस-ओ-कामिल नहीं रहा

वा कर दिये हैं शौक ने बन्द-ए-नकाब-ए-हुसन
गैर अज़ निगाह अब कोई हायल नहीं रहा

गो मैं रहा रहीन-ए-सितम-हाए-रोज़गार
लेकिन तेरे ख्याल से ग़ाफ़िल नहीं रहा

दिल से हवा-ए-किशत-ए-वफ़ा मिट गया कि वां
हासिल सिवाये हसरत-ए-हासिल नहीं रहा

बेदाद-ए-इशक से नहीं झ्रता मगर "असद"
जिस दिल पे नाज़ था मुझे वो दिल नहीं रहा



46. सुरमा-ए-मुफ्त-ए-नज़र हूं

सुरमा-ए-मुफ्त-ए-नज़र हूं, मेरी कीमत ये है
कि रहे चशम-ए-खरीदार पे एहसां मेरा

रुखसत-ए-नाला मुझे दे कि मबादा ज़ालिम
तेरे चेहरे से हो ज़ाहर ग़ाम-ए-पिनहां मेरा

-अणछपी ग़ाज़ल-

खलवत-ए आबला-ए-पा में है जौलां मेरा
खूं है दिल तंगी-ए-वहशत से बयाबां मेरा
हसरत-ए-नशा-ए-वहशत न ब-सअई-ए दिल है
अरज़-ए-खमयाज़ा-ए-मजनूं है गरेबां मेरा

फ़हम ज़ंजीरी-ए-बेरबती-ए दिल है या रब
किस ज़बां में है लकब ख्वाब-ए-परेशां मेरा



47. इशरत-ए-कतरा है दरिया में फ़ना हो जाना

इशरत-ए-कतरा है दरिया में फ़ना हो जाना
दर्द का हद से गुज़रना है दवा हो जाना

तुझसे किस्मत में मेरी सूरत-ए-कुफ़ल-ए-अबजद
था लिखा बात के बनते ही जुदा हो जाना

दिल हुआ कशमकशे-चारा-ए-ज़हमत में तमाम
मिट गया घिसने में इस उकदे का वा हो जाना

6 अब ज़फ़ा से भी हैं महरूम हम, अल्लाह-अल्लाह!
इस कदर दुश्मन-ए-अरबाब-ए-वफ़ा हो जाना

ज़ोफ़ से गिरियां मुबद्दल ब-दमे-सरद हुआ
बावर आया हमें पानी का हवा हो जाना

दिल से मिटना तेरी अंगुशते-हनायी का ख्याल
हो गया गोशत से नाखुन का जुदा हो जाना

है मुझे अब्र-ए-बहारी का बरस कर खुलना
रोते-रोते ग़म-ए-फुरक्त में फ़ना हो जाना

गर नहीं निकहत-ए-गुल को तेरे कूचे की हवस
कयों है गरद-ए-रह-ए-जौलाने-सबा हो जाना



ताकि मुझ पर खुले ऐजाझे-हवाए-सैकल
देख बरसात में सबज्ज आईने का हो जाना

बखशे हैं जलवा-ए-गुल झौक-ए-तमाशा, 'गालिब'
चशम को चाहिये हर रंग में वा हो जाना



48. हम से खुल जायो ब-वकते-मै-परसती एक दिन

हम से खुल जायो ब-वकते-मै-परसती एक दिन
वरना हम छेड़ेंगे रख कर उज्जर-ए-मसती एक दिन

गर्ग-ए औज-ए-बिना-ए-आलम-ए-इमकां न हो
इस बुलन्दी के नसीबों में है पसती एक दिन

करज्ज की पीते थे मै लेकिन समझते थे कि हाँ
रंग लावेगी हमारी फ़काका-मसती एक दिन

नगमा-हाए-ग़म को भी ऐ दिल ग़नीमत जानिये
बे-सदा हो जाएगा यह साज्ज-ए-हसती एक दिन

धौल-धप्पा उस सरापा-नाज्ज का शेवा नहीं
हम ही कर बैठे थे ग़ालिब पेश-दसती एक दिन



49. इबने-मरियम हुआ करे कोई

इबने-मरियम हुआ करे कोई
मेरे दुख की दवा करे कोई

शरअ-ओ-आईन पर मदार सही
ऐसे कातिल का क्या करे कोई

चाल, जैसे कड़ी कमां का तीर
दिल में ऐसे के जा करे कोई

बात पर वां ज्बान कटती है
वो कहें और सुना करे कोई

बक रहा हूं जुनूं में क्याक्या कुछ
कुछ न समझे खुदा करे कोई

न सुनो गर बुरा कहे कोई
न कहो गर बुरा करे कोई

रोक लो, गर ग़लत चले कोई
बख्श दो गर ख़ता करे कोई

कौन है जो नहीं है हाजतमन्द
किसकी हाजत रवा करे कोई



क्या किया खिज्र ने सिकन्दर से
अब किसे रहनुमा करे कोई

जब तवक्को ही उठ गयी 'शालिब'
क्यों किसी का गिला करे कोई



50. क्योंकर उस बुत से रखूँ जान अजीज़

क्योंकर उस बुत से रखूँ जान अजीज़
क्या नहीं है मुझे ईमान अजीज़

दिल से निकला प न निकला दिल से
है तेरे तीर का पैकान अजीज़
ताब लाये ही बनेगी "ग़ालिब"
बाक्या सख्त है और जान अजीज़



51. आमद-ए-खत से हुआ है सरद जो बाज़ार-ए-दोसत

आमद-ए-खत से हुआ है सरद जो बाज़ार-ए-दोसत
दूद-ए-शम-ए-कुशता था शायद खत-ए-रुखसार-ए-दोसत

ऐ दिले-ना-आकबत-अन्देश जबत-ए-शौक कर
कौन ला सकता है ताबे-जलवा-ए-दीदार-ए-दोसत

खाना-वीरां-साज़ी-ए-हैरत तमाशा कीजिये
सूरत-ए-नक्शे-कदम हूं रफता-ए-रफतार-ए-दोसत

इशक में बेदाद-ए-रशक-ए-गैर ने मारा मुझे
कुशता-ए-दुशमन हूं आखिर, गरचे था बीमार-ए-दोसत

चशम-ए-मा रौशन कि उस बेदर्द का दिल शाद है
दीदा-ए-पुरखूं हमारा साग़स्ए-सरशार-ए-दोसत

गैर यूं करता है मेरी पुरसिश उस के हित्र में
बे-तकल्लुफ दोसत हो जैसे कोई ग़मखवार-ए-दोसत

ताकि मैं जानूं कि है उस की रसायी वां तलक
मुझ को देता है पयाम-ए-वादा-ए-दीदार-ए-दोसत



जबकि में करता हूँ अपना शिकवा-ए-ज़ोफ-ए-दिमार
सर करे है वह हदीस-ए-ज़ुल्फ़-ए-अम्बरबार-ए-दोसत

चुपके-चुपके मुझ को रोते देख पाता है अगर
हंस के करता है बयाने-शोखी-ए-गुफ़तारे-दोसत

मेहरबानी हाए-दुश्मन की शिकायत कीजिये
या बयां कीजे, सिपासे-लज्जते-आज़ारे-दोसत

यह ग़ज़ल अपनी मुझे जी से पसन्द आती है आप
है रदीफ़-ए-शेर में "ग़ालिब" ज़बस तकरार-ए-दोसत



52. क्यों जल गया न ताब-ए-रुख-ए-यार देख कर

क्यों जल गया न ताब-ए-रुख-ए-यार देख कर
जलता हूं अपनी ताकत-ए-दीदार देख कर

आतिश-परसत कहते हैं अहल-ए-जहां मुझे
सर-गरम-ए-नाला-हा-ए-शरर-बार देख कर

क्या आबरू-ए-इशक जहां आम हो जफ़ा
रुकता हूं तुम को बे-सबब आज़ार देख कर

आता है मेरे कतल को पर जोश-ए-रशक से
मरता हूं उस के हाथ में तलवार देख कर

साबित हुआ है गरदन-ए-मीना पे खून-ए-खलक
लरज़े है मौज-ए-मय तेरी रफतार देख कर

वा-हसरता कि यार ने खींचा सितम से हाथ
हम को हरीस-ए-लज्जत-ए-आज़ार देख कर

बिक जाते हैं हम आप मता-ए-सुखन के साथ
लेकिन अयार-ए-तबा-ए-खरीदार देख कर

जुन्नार बांध सुभ्म-ए-सद-दाना तोड़ डाल
रह-रौ चले है राह को हम-वार देख कर



इन आबलों से पांव के घबरा गया था में
जी खुश हुआ है राह को पुर-खार देख कर

क्या बद-गुमां है मुझ से के आईने में मेरे
तूती का अकस समझे है ज़ंगार देख कर

गिरनी थी हम पे बरक-ए-तजल्ली न तूर पर
देते हैं बादा ज़रफ-ए-कदह-खवार देख कर

सर फोड़ना वो 'ग़ालिब'-ए-शोरीदा हाल का
याद आ गया मुझे तेरी दीवार देख कर



53. कोई दिन गर ज़िन्दगानी और है

कोई दिन गर ज़िन्दगानी और है
अपने जी में हमने ठानी और है

आतिश-ए-दोज़ख में ये गरमी कहां
सोज़-ए-ग़ाम-हाए-नेहानी और है

बारहा देखीं हैं उनकी रंजिशें
पर कुछ अब के सरगिरानी और है

देके ख़त मुंह देखता है नामाबर
कुछ तो पैग़ाम-ए-ज़बानी और है

काता-अम्मार हैं अकसर नुजूम
वो बला-ए-आसमानी और है

हो चुकीं 'ग़ालिब' बलाएं सब तमाम
एक मरग-ए-ना-गहानी और है

54. कब वो सुनता है कहानी मेरी
कब वो सुनता है कहानी मेरी
और फिर वो भी ज़बानी मेरी

ख़लिश-ए-ग़ामज़ा-ए-खूऱेज न पूछ
देख खून्नाबा-फ़िशानी मेरी



क्या बयां करके मेरा रोएंगे यार
मगर आशुफता-बयानी मेरी

हूं ज़-खुद रफता-ए-बैदा-ए-खयाल
भूल जाना है निशानी मेरी

मुतकाबिल है मुकाबिल मेरा
रुक गया देख रवानी मेरी

कद्रे-संगे-सरे-रह रखता हूं
सख्त-अरज़ां है गिरानी मेरी

गरद-बाद-ए-रहे-बेताबी हूं
सरसरे-शौक है बानी मेरी

दहन उसका जो न मालूम हुआ
खुल गयी हेच मदानी मेरी

कर दिया ज़ोफ़ ने आज़िज़ 'ग़ालिब'
नंग-ए-पीरी है जवानी मेरी



55. लाजिम था कि देखो मेरा रसता कोई दिन और

लाजिम था कि देखो मेरा रसता कोई दिन और
तनहा गये क्यों ? अब रहो तनहा कोई दिन और

मिट जायेगा सर, गर तेरा पत्थर न घिसेगा
हूं दर पे तेरे नासिया-फरसा कोई दिन और

आये हो कल और आज ही कहते हो कि जाऊं
माना कि हमेशा नहीं, अच्छा, कोई दिन और

जाते हुए कहते हो, क्यामत को मिलेंगे
क्या खूब ! क्यामत का है गोया कोई दिन और

हां ऐ फ़लक-ए-पीर, जवां था अभी आरिफ़
क्या तेरा बिगड़ता जो न मरता कोई दिन और

तुम माह-ए-शब-ए-चार-दहुम थे मेरे घर के
फिर क्यों न रहा घर का वो नकशा कोई दिन और

तुम कौन से ऐसे थे खरे दाद-ओ-सितद के
करता मलक-उल-मौत तकाज़ा कोई दिन और

मुझसे तुम्हें नफ़रत सही, न यर से लड़ाई
बच्चों का भी देखा न तमाशा कोई दिन और



गुजरी न बहर-हाल ये मुद्दत खुश-ओ-नाखुश
करना था, जवां-मरग! गुज़ारा कोई दिन और
नादां हो जो कहते हो कि कयों जीते हो "ग़ालिब"
किस्मत में है मरने की तमन्ना कोई दिन और



56. ज़ख्म पर छिड़कें कहां तिफ़लान-ए- बेपरवा नमक

ज़ख्म पर छिड़कें कहां तिफ़लान-ए-बेपरवा नमक

क्या मज्जा होता अगर पत्थर में भी होता नमक

गरद-ए-राह-ए-यार है सामान-ए-नाज-ए-ज़ख्म-ए-दिल
वरना होता है जहां में किस कदर पैदा नमक

मुझे को अरजानी रहे तुझे को मुबारक हो जयूं
नाला-ए-बुलबुल का दर्द और खन्दा-ए-गुल का नमक

शोर-ए-जौलां था कनार-ए-बहर पर किस का कि आज
गरद-ए-साहल है ब-ज़ख्म-ए-मौज-ए-दरिया नमक

दाद देता है मेरे ज़ख्म-ए-जिगर की वाह वाह
याद करता है मुझे देखे हैं वो जिस जा नमक

छोड़ कर जाना तन-ए-मजरूह-ए-आशिक हैफ़ है
दिल तलब करता है ज़ख्म और मांगे हैं आज्ञा नमक

गैर की मिन्नत न खींचूंगा पय-ए-तौफ़ीर-ए-दर्द
ज़ख्म मिसल-ए-खन्दा-ए-कातिल है सर-ता-पा नमक

याद हैं 'ग़ालिब' तुझे वो दिन कि वजद-ए-ज़ौक में
ज़ख्म से गिरता तो मैं पलकों से चुनता था नमक



57. फिर इस अन्दाज से बहार आई

फिर इस अन्दाज से बहार आई
कि हुए मेरो-मह तमाशाई

देखो ऐ साकिनान-ए-खित्ता-ए-खाक
इसको कहते हैं आलम-आराई

कि जर्मीं हो गई है सर-ता-सर
रू-कश-ए-सतह-ए-चरख-ए-मीनाई

सबज्जा को जब कहीं जगह न मिली
बन गया रू-ए-आब पर काई

सबज्जा-ओ-गुल के देखने के लिये
चशमे-नरिगस को दी है बीनाई

है हवा में शराब की तासीर
बादा-नोशी है बादा-पैमाई

क्यूं न दुनिया को हो खुशी'ग़ालिब'
शाह-ए-दींदार ने शिफ़ा पाई



58. आबरू क्या खाक उस गुल की कि गुलशन में नहीं

आबरू क्या खाक उस गुल की कि गुलशन में नहीं
है गरेबां नंग-ए-पैराहन जो दामन में नहीं

ज़ोफ़ से ऐ गिरिया, कुछ बाकी मेरे तन में नहीं
रंग हो कर उड़ गया, जो खूं कि दामन में नहीं

हो गए हैं जमा अज्जा-ए-निगाहे-आफ़ताब
जर्रे उसके घर की दीवारों के रौज़न में नहीं

क्या कहूं तारीकी-ए-जिन्दान-ए-ग़ाम अंधेर है
पुम्बा नूर-व-सुबह से कम जिसके रौज़न में नहीं

रौनक-ए-हसती है इशके-खाना-वीरां-साज़ से
अंजुमन बे-शमय है, गर बरक खिरमन में नहीं

ज़ख्म सिलवाने से मुझ पर चाराजोयी का है ताअन
गैर समझा है कि लज्जत ज़ख्मे-सोज़न में नहीं

बस कि हैं हम इक बहारे-नाज़ के मारे हुए
जलवा-ए-गुल के सिवा गरद अपने मदफ़न में नहीं

कतरा-कतरा इक हयूला है नए नासूर का
खूं भी ज़ौके-दर्द से फ़ारिश मेरे तन में नहीं



ले गई साकी की नखवत कुलजुम-आशामी मेरी
मौजे-मय की आज रग मीना की गरदन में नहीं

हो फ़िशारे-ज़ोफ़ में क्या नातवानी की नुमूद
कद के झुकने की भी गुंजायश मेरे तन में नहीं

थी वतन में शान क्या ग़ालिब, कि हो गुरबत में कद्र
बे-तकललुफ़ हूँ वो मुशते-खस कि गुलखन में नहीं



59. इशक मुझको नहीं, वहशत ही सही

इशक मुझको नहीं, वहशत ही सही
मेरी वहशत, तेरी शोहरत ही सही

कतय कीजे न तअल्लुक हम से
कुछ नहीं है, तो अदावत ही सही

मेरे होने में है क्या रुसवाई
ऐ वो मजलिस नहीं खलवत ही सही

हम भी दुश्मन तो नहीं हैं अपने
गैर को तुझ से मुहब्बत ही सही

अपनी हसती ही से हो, जो कुछ हो
आगही गर नहीं ग़फ़लत ही सही

उम्र हरचन्द कि है बरक-ए-खिराम
दिल के खूं करने की फ़ुरसत ही सही

हम कोई तरक-ए-वफ़ा करते हैं
न सही इशक मुसीबत ही सही

कुछ तो दे, ऐ फ़लक-ए-नायनसाफ़
आह-ओ-फ़रियाद की रुख़सत ही सही



हम भी तसलीम की खू डालेंगे
बेनियाज़ी तेरी आदत ही सही

यार से छेड़ चली जाये, 'असद'
गर नहीं वसल तो हसरत ही सही



60. हम पर जफ़ा से तरक-ए-वफ़ा का गुमां नहीं

हम पर जफ़ा से तरक-ए-वफ़ा का गुमां नहीं
इक छेड़ है, वगरना मुराद इमतहां नहीं

किस मुंह से शुक्र कीजिए इस लुतफ़-ए-खास का
पुरसिश है और पा-ए-सुख्न दरमियां नहीं

हमको सितम अज्जीज़ सितमगर को हम अज्जीज़
ना-मेहरबां नहीं है, अगर मेहरबां नहीं

बोसा नहीं न दीजिए दुशनाम ही सही
आखिर ज़बां तो रखते हो तुम, गर दहां नहीं

हरचन्द जां-गुदाज़ी-ए-कहर-ओ-इताब है
हरचन्द पुशत-गरमी-ए-ताब-ओ-तवां नहीं

जां मुतरिब-ए-तराना-ए-'हल-मिम-मज्जीद' है
लब, परदा संज-ए-ज़मज्जम-ए-अल-अमां नहीं

ख़ंजर से चीर सीना, अगर दिल न हो दो-नीम
दिल में छुरी चुभो, मिज्गां गर ख़ूंचकां नहीं

है नंग-ए-सीना दिल अगर आतिश-कदा न हो
है आर-ए-दिल-नफ़स अगर आज़र-फ़िशां नहीं



नुकसां नहीं, जुनूं में बला से हो घर खराब
सौ ग़ज़ झर्मीं के बदले बयाबां गिरां नहीं

कहते हो क्या लिखा है तेरे सरनविशत में
गोया जबीं पे सिजदा-ए-बुत का निशां नहीं

पाता हूं उससे दाद कुछ अपने कलाम की
रुहुल-कुदूस अगरचे मेरा हमजबां नहीं

जां से बहा-ए-बोसा वले कयूं कहे अभी
'ग़ालिब' को जानता है कि वो नीम-जां नहीं

जिस जा कि पा-ए-सैल-ए-बला दरमियां नहीं
दीवानगां को वां हवस-ए-खान-मां नहीं

गुल गुंच़गी में ग़रक-ए-दरिया-ए-रंग है
ऐ आगही फ़रेब-ए-तमाशा कहां नहीं



61. उस बज्जम में मुझे नहीं बनती हया किये

उस बज्जम में मुझे नहीं बनती हया किये
बैठा रहा अगरचे इशारे हुआ किये

दिल ही तो है सियासत-ए-दरबां से डर गया
मैं और जाऊं दर से तेरे बिन सदा किये

रखता फिरूं हूँ खिरका-ओ-सज्जादा रहन-ए-मय
मुदत हुयी है दावत-ए-आब-ओ-हवा किये

बेसरफ़ा ही गुज़रती है, हो गरचे उम्र-ए-खिज्ज़र
हज़रत भी कल कहेंगे कि हम क्या किया किये

मकदूर हो तो खाक से पूछूँ के ऐ लईम
तूने वो गंजहा-ए-गिरां-माया क्या किये

किस रोज़ तोहमतें न तराशा किये अदू
किस दिन हमारे सर पे न आरे चला किये

सोहबत में गैर की न पड़ी हो कहीं ये खू
देने लगा है बोसे बगैर इलतिजा किये

ज़िद की है और बात मगर खू बुरी नहीं
भूले से उस ने सैकड़ों वादे-वफ़ा किये



'गालिब' तुम्हीं कहो कि मिलेगा जवाब क्या
माना कि तुम कहा किये और वो सुना किये



62. देखना किस्मत कि आप अपने पे रशक आ जाये है

देखना किस्मत कि आप अपने पे रशक आ जाये है
मैं उसे देखूँ भला कब मुझसे देखा जाये है

हाथ धो दिल से यही गरमी गर अन्देशे में है
आबगीना तुन्दी-ए-सहबा से पिघला जाये है

गैर को या रब ! वो कयों कर मना-ए-गुस्ताखी करे
गर हया भी उसको आती है, तो शरमा जाये है

शौक को ये लत, कि हरदम नाला खींचे जायए
दिल कि वो हालत, कि दम लेने से घबरा जाये है

दूर चशम-ए-बद ! तेरी बज्जम-ए-तरब से वाह, वाह
नगामा हो जाता है वां गर नाला मेरा जाये है

गरचे है तरज्ज-ए-तगाफुल, परदादार-ए-राज्ज-ए-इशक
पर हम ऐसे खोये जाते हैं कि वो पा जाये है

उसकी बज्जम-आरायां सुनकर दिल-ए-रंजूर यां
मिसल-ए-नक्श-ए-मुहआ-ए-गैर बैठा जाये है

होके आशिक, वो परीरुख और नाजुक बन गया
रंग खुलता जाये है, जितना कि उड़ता जाये है



नक्श को उसके मुसविर पर भी क्या-क्या नाज़ है
खींचता है जिस कदर, उतना ही खिंचता जाये है

साया मेरा मुझसे मिसल-ए-दूद भागे है "असद"
पास मुझ आतिश-ब-ज्ञां के किस से ठहरा जाये है



63. सादगी पर उस की मर जाने की हसरत दिल में है

सादगी पर उस की मर जाने की हसरत दिल में है
बस नहीं चलता कि फिर खंजर कफ़-ए-कातिल में है

देखना तकरीर की लज्जत कि जो उसने कहा
मैंने यह जाना कि गोया यह भी मेरे दिल में है

गरचे है किस किस बुरायी से वले बाई-हमा
जिक्र मेरा मुझ से बेहतर है कि उस महफ़िल में है

बस हुजूम-ए-ना उम्मीदी खाक में मिल जायगी
यह जो इक लज्जत हमारी सई-ए-बे-हासिल में है

रंज-ए-रह कयों खींचे वामांदगी को इशक है
उठ नहीं सकता हमारा जो कदम मंज़िल में है

जलवा ज्ञार-ए-आतिश-ए-दोजख्ब हमारा दिल सही
फ़ितना-ए-शोर-ए-कयामत किस की आब-ओ-गिल में है

है दिल-ए-शोरीदा-ए-ग़ालिब तिलिसम-ए-पेच-ओ-ताब
रहम कर अपनी तमन्ना पर कि किस मुशिकल में है



64. दिल से तेरी निगाह जिगर तक उतर गई

दिल से तेरी निगाह जिगर तक उतर गई
दोनों को इक अदा में रज्ञामन्द कर गई

चाक हो गया है सीना खुशा लज्जत-ए-फराग
तकलीफ़-ए-परदादारी-ए-ज़ख्म-ए-जिगर गई

वो बादा-ए-शबाना की सरमसितयां कहां
उठिये बस अब कि लज्जत-ए-ख्वाब-ए-सहर गई

उड़ती फिरे है खाक मेरी कू-ए-यार में
बारे अब ऐ हवा, हवस-ए-बाल-ओ-पर गई

देखो तो दिल फ़रेबी-ए-अन्दाज़-ए-नक्श-ए-पा
मौज-ए-खिराम-ए-यार भी क्या गुल कतर गई

हर बुलहवस ने हुसन परसती श्यार की
अब आबरू-ए-शेवा-ए-अहल-ए-नज़र गई

नज़्जारे ने भी काम किया वां नकाब का
मसती से हर निगह तेरे रुख पर बिखर गई

फ़रदा-ओ-दी का तफ़रका यक बार मिट गया
कल तुम गए कि हम पे क्यामत गुज़र गई



मारा ज़माने ने 'असदुल्लाह खां' तुम्हें
वो वलवले कहां, वो जवानी किधर गई



65. अजब निशात से जल्लाद के चले हैं हम आगे

अजब निशात से जल्लाद के चले हैं हम आगे
कि अपने साए से सर पांव से है दो कदम आगे

क़ज़ा ने था मुझे चाहा ख़राब-ए-बादा-ए-उलफ़त
फ़क्त "ख़राब" लिखा बस, न चल सका कलम आगे

ग़म-ए-ज़माना ने झाड़ी निशात-ए-इशक की मस्ती
वगरना हम भी उठाते थे लज़्जत-ए-अलम आगे

खुदा के वासते दाद उस जुनून-ए-शौक की देना
कि उस के दर पे पहुंचते हैं नामा-बर से हम आगे

यह उम्र भर जो परेशानियां उठायी हैं हम ने
तुम्हारे आइयो ऐ तुरह-हा-ए-ख़म-ब-ख़म आगे

दिल-ओ-जिगर में पुर-अफ़शा जो एक मौज-ए-खूं है
हम अपने ज्ञोअम में समझे हुए थे उस को दम आगे

कसम जनाज़े पे आने की मेरे खाते हैं "ग़ालिब"
हमेशा खाते थे जो मेरी जान की कसम आगे

66. शिकवे के नाम से बे-मेहर ख़फ़ा होता है
शिकवे के नाम से बे-मेहर ख़फ़ा होता है



ये भी मत कह कि जो कहये तो गिला होता है

पुर हूं मैं शिकवा से यूं राग से जैसे बाजा
इक ज़रा छेड़िये, फिर देखिये क्या होता है

गो समझता नहीं पर हुसने-तलाफ़ी देखो!
शिकवा-ए-ज़ौर से सरगरम-ए-जफ़ा होता है

इशक की राह में है, चरख-ए-मकोकब की वो चाल
सुसत-रौ जैसे कोई आबला-पा होता है

क्यूं न ठहरें हदफ़-ए-नावक-ए-बेदाद कि हम
आप उठा लाते हैं गर तीर ख़ता होता है

ख़ूब था पहले से होते जो हम अपने बदख़वाह
कि भला चाहते हैं, और बुरा होता है

नाला जाता था, परे अरश से मेरा, और अब
लब तक आता है जो ऐसा ही रसा होता है

ख़ामा मेरा कि वह है बारबुद-ए-बज़म-ए-सुखन
शाह की मदह में यूं नग़मा-सरा होता है

ऐ शहनशाह-ए-कवाकिब सिपह-ओ-मेहर-अलम
तेरे इकराम का हक किस से अदा होता है



सात इकलीम का हासिल जो फ़राहम कीजे
तो वह लशकर का तेरे, नाल-ए-बहा होता है

हर महीने में जो यह बदर से होता है हिलाल
आसतां पर तेरे यह नासिया-सा होता है

मैं जो गुसताख हूं आईना-ए-ग़ज़ल-ख़वानी में
यह भी तेरा ही करम झौक-फ़िज़ा होता है

रखियो "ग़ालिब" मुझे इस तल़ख-नवायी से मुआ़आफ़
आज कुछ दर्द मेरे दिल में सिवा होता है



67. दिया है दिल अगर उसको बशर है क्या कहये

दिया है दिल अगर उसको बशर है क्या कहये
हुआ रकीब तो हो नामाबर है क्या कहये

ये ज़िद कि आज न आवे और आये बिन न रहे
क़ज़ा से शिकवा हमें किस कदर है क्या कहये

रहे हैं यूँ गहेबेगह कि कूए-दोसत को अब
अगर न कहये कि दुशमन का घर है क्या कहये

ज़हे-करिशमा कि यूँ दे रखा है हमको फ़रेब
कि बिन कहे ही उन्हें सब खबर है, क्या कहये

समझ के करते हैं बाज़ार में वो पुरिसश-ए-हाल
कि ये कहे कि सर-ए-रहगुजर है क्या कहये

तुम्हें नहीं है सर-ए-रिशता-ए-वफ़ा का ख़्याल
हमारे हाथ में कुछ है मगर है क्या कहये

उन्हें सवाल पे ज़ोअमे-जुनून है कयूँ लड़िये
हमें जवाब से कत-ए-नज़र है, क्या कहये

हसद सज्जा-ए-कमाल-ए-सुखन है क्या कीजे
सितम बहा-ए-मताअ-ए-हुनर है क्या कहये



कहा है किसने कि 'ग़ालिब' बुरा नहीं लेकिन
सिवाय इसके कि आशुक्फता-सर है क्या कहये



68. कभी नेकी भी उसके जी में आ जाये है मुझ से

कभी नेकी भी उसके जी में आ जाये है मुझ से
जफ़ार्यें करके अपनी याद शरमा जाये है मुझ से

खुदाया ज़ज़बा-ए-दिल की मगर तासीर उलटी है
कि जितना खेंचता हूं और खिंचता जाये है मुझ से

वो बद-खू और मेरी दासतान-ए-इशक तूलानी
इबारत मुख्तसर कासिद भी घबरा जाये है मुझ से

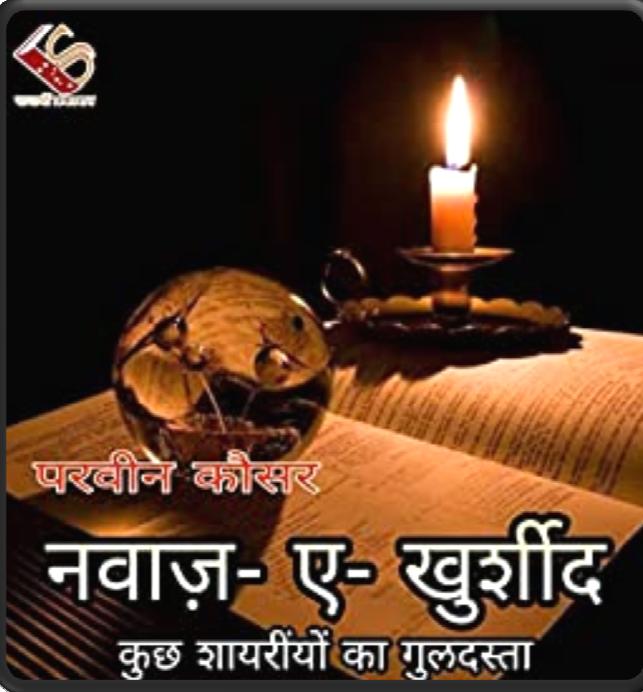
उधर वो बदगुमानी है इधर ये नातवानी है
ना पूछा जाये है उससे न बोला जाये है मुझ से

संभलने दे मुझे ऐ नाउम्मीदी क्या क्यामत है
कि दामन-ए-खयाल-ए-यार छूटा जाये है मुझ से

तकल्लुफ़ बर-तरफ़ नज़ज़ारगी में भी सही लेकिन
वो देखा जाये कब ये ज़ुलम देखा जाये है मुझ से

हुए हैं पांव ही पहले नवरद-ए-इशक में ज़ख्मी
न भागा जाये है मुझसे न ठहरा जाये है मुझ से

क्यामत है कि होवे मुद्यी का हमसफ़र 'ग़ालिब'
वो काफ़िर जो खुदा को भी न सौंपा जाये है मुझ से



परबीने कौसर

नवाज़- ए- खुर्दाद

कुछ शायरीयों का गुलदस्ता

फैल शातदूत्यु का रीबत्या

नवाज़- ए- खुर्दाद